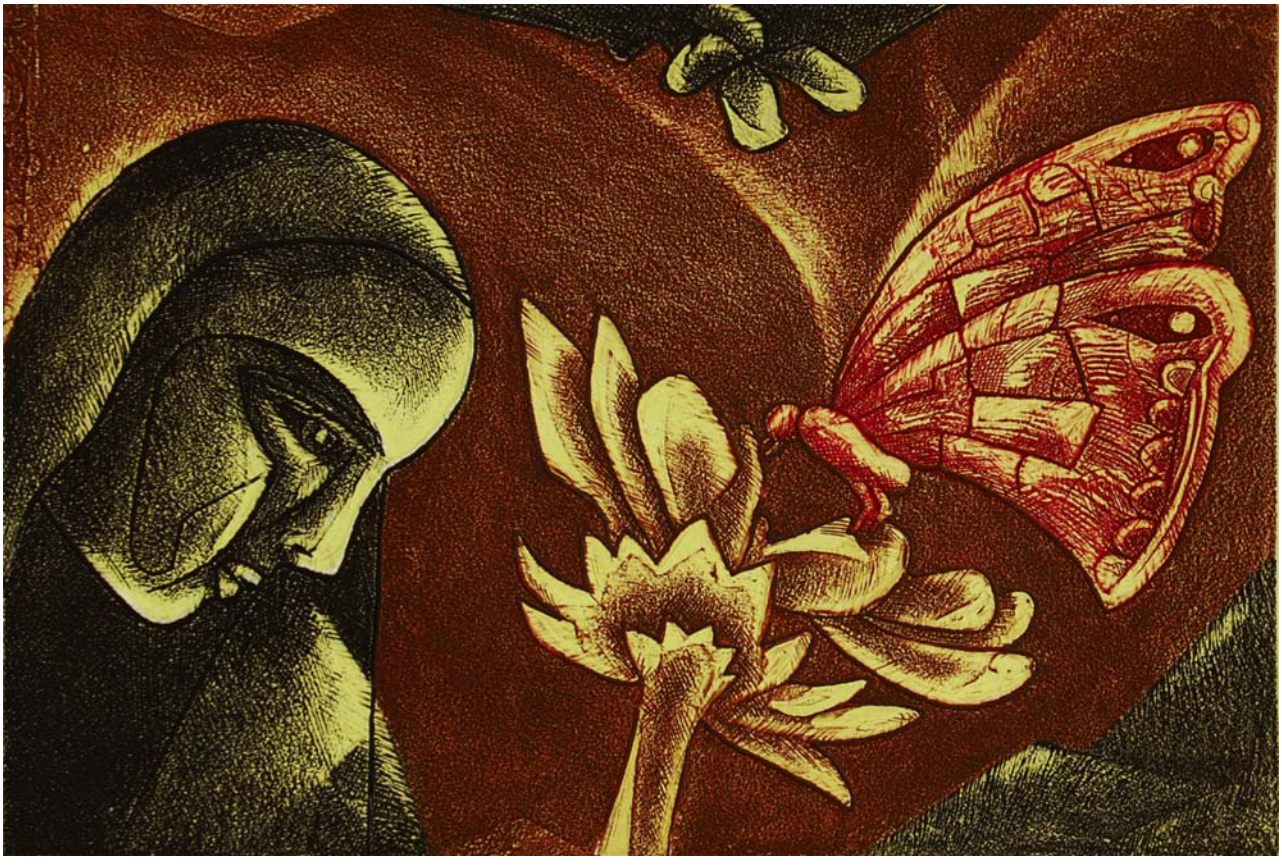

उत्तम कुमार बसाक
इंटिमेसी, एचिंग, 38 x 20 से.मी.

अमेरिका पहुंची भारतीय छापा कला

दीपांजली काकाती

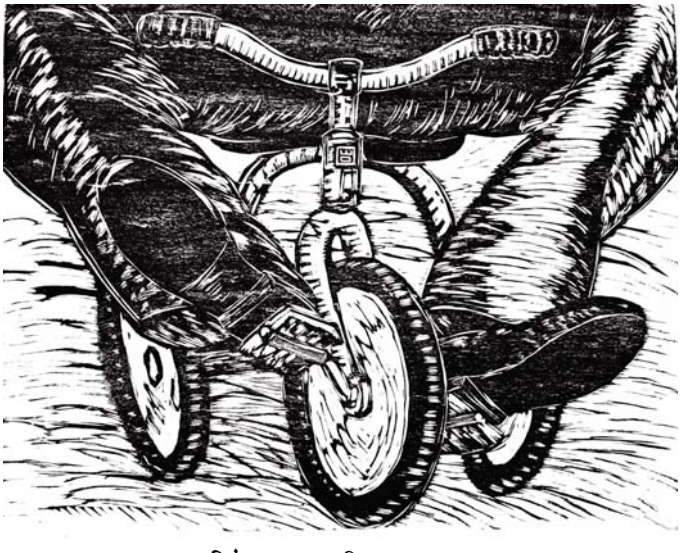

वाल्टर डि'सूज़ा *ट्राइसाइकिल*
वुडकट, 43.18 x 55.88 से.मी.

फ्रेंक म्यूज़ियम में समकालीन भारतीय छापा कला की प्रदर्शनी में 29 कलाकारों की कृतियां।

वेस्टरविल, ओहायो स्थित ऑट्टरबिन कॉलेज के फ्रेंक कला संग्रहालय में ''करंट इम्प्रेशन'' नामक प्रदर्शनी में पहली बार समकालीन भारतीय छापा कला को प्रदर्शित किया गया है। न्यू यॉर्क में रहने वाले छापा कलाविद और कला संग्राहक विजय कुमार ने प्रदर्शनी के लिए एचिंग, सेरिग्राफ, वुडकट, एन्ग्रेविंग, एक्वाटिंट और लिथोग्राफ जैसे विविध माध्यमों से तैयार की गई 35 कृतियों को चुना है।

कुमार ने 29 कलाकारों की कृतियों को चुनते हुए तीन कसौटियां रखी थीं- एक, वे परम्परागत विधियों से बनी हों, कंप्यूटर जनित डिजिटल या स्कैन की गई इमेज प्रतिलिपियां न हों; दूसरे, वे जिस कागज पर तैयार की गई हों, उनका आकार 56 x 76 से.मी. से अधिक न हो जिससे कि कलाकृतियों को अमेरिका ले जाना आसान हो; तीसरे, वे हाल में बनाई गई हों- वर्ष 2004 से पहले न तैयार की गई हों।

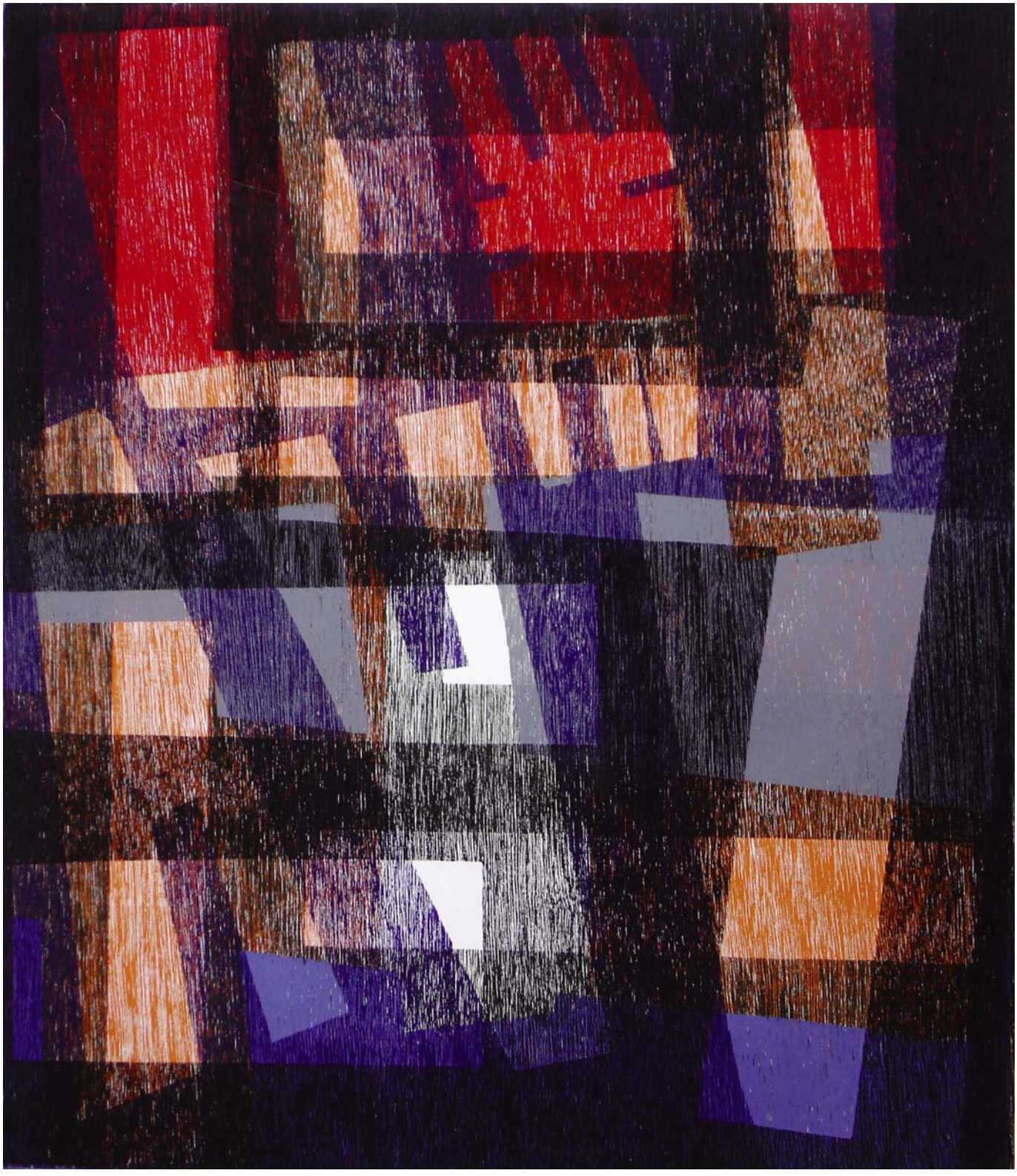

भवानी शंकर शर्मा *कलर सिम्फनी*
वुडकट, 64 x 52 से.मी.

कुमार बताते हैं, ''मुझे बहुत खुशी हुई कि कुछ कलाकारों ने इस प्रदर्शनी के लिए छापों की नई शृंखलाएं तैयार कीं।'' छापा कला की उनकी पहली याद लखनऊ, उत्तर प्रदेश में बिताए बचपन के दिनों की है जब वे कपड़े पर लकड़ी के ब्लॉकों के छापा देखते थे।

प्रदर्शित कृतियों में विविध विषयों के साथ-साथ संवेदन की भी विविधता झलकती है। वाल्टर डि'सूज़ा की छापा कलाकृति ''ट्राइसाइकिल'' भारतीय उपमहाद्वीप की मौजूदा स्थिति पर एक टिप्पणी है। यह उनकी शृंखला ''टिकट टू राइड'' का हिस्सा है। पारम्परिक मुखौटों के माध्यम से दुख से लेकर खुशी तक के भाव दिखाती हेमावती गुहा की छापा कलाकृति ''क्लाउन'' कई तरह से देखी-समझी जा सकती है। ''कलर सिम्फनी'' कृति को तैयार करने वाले कलाकार भवानी शंकर शर्मा कहते हैं, ''मैंने विभिन्न रागों की मंद्र ध्वनियों और लयों को विजुएल स्वरूप देने का प्रयास किया है।''

छापों को चुनते हुए विजय कुमार के मन में शैली और विषयों की विविधता प्रदर्शित कर पाने की इच्छा थी। वह कहते हैं, ''कुछ छापा कृतियों के बिम्ब से यह पता लग सकता है कि वे किस देश की हैं लेकिन ज़्यादातर के बारे में यह बात नहीं कही जा सकती। कुछ कृतियों में हास्यबोध है, तो कुछ वर्णन-सी करती प्रतीत होती हैं। कुछ ज़्यादातर रंग और सरंचना पर केंद्रित हैं। कुछ कृतियों में कलाकारों ने आकाश गंगाओं और बाहरी अंतरिक्ष को भी दर्शाया है, तो कुछ आकृतिमूलक हैं लेकिन सभी एकदम निजी अभिव्यक्तियां हैं।''

उत्तम कुमार बसाक की 'इंटिमेसी' के समृद्ध रंगों से शाहिद परवेज़ की लोक बिम्बों वाली ''फ्रेंड्स'' और यशपाल चंद्राकर की 'टेन विंडोज़' के बहुआयामी परिप्रेक्ष्य तक, प्रदर्शनी समकालीन भारतीय छापाकारी की बहुरंगी छटा की एक झलक दिखती है।

छापाकार परवेज़ कहते हैं, ''मैं अपने काम में हास्य बोध रचने की कोशिश करता हूं जो अस्तित्व की असंगतताओं के बोध और चित्रण से आता है। यह लोक और आदिवासी कलाओं में हमेशा उपस्थित रहता है जिनसे मैं प्रेरणा पाता हूं। मैं किसी दृश्य को बच्चे के मानस की उत्सुकता से देखता हूं और उसे बहुत समृद्ध, बहुत जटिल पाता हूं। आखिर मेरी रचना में एक वयस्क के अनुभव में बालसुलभ कल्पना का एक महीन खमीर काम करता दिखता है।''

प्रदर्शनी में दत्तात्रेय आप्टे, राजन फुलरी, हनुमान काम्बली, विजय कुमार, अभिजीत रॉय और के.आर.सुब्बना की छापा कृतियां भी प्रदर्शित की गई हैं।

फ्रैंक म्यूज़ियम ओहायो के कोलम्बस शहर के एक कस्बे वेस्टरविल के ऑट्टरबीन कॉलेज में 29 साल तक कला, धर्मशास्त्र और दर्शन की अध्यापिका रही लिलियन फ्रैंक का

सभार: निकलस हिल

फ्रेंक म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट में ''करंट इम्प्रेशन्स'' प्रदर्शनी।

वेस्टरविल, ओहायो

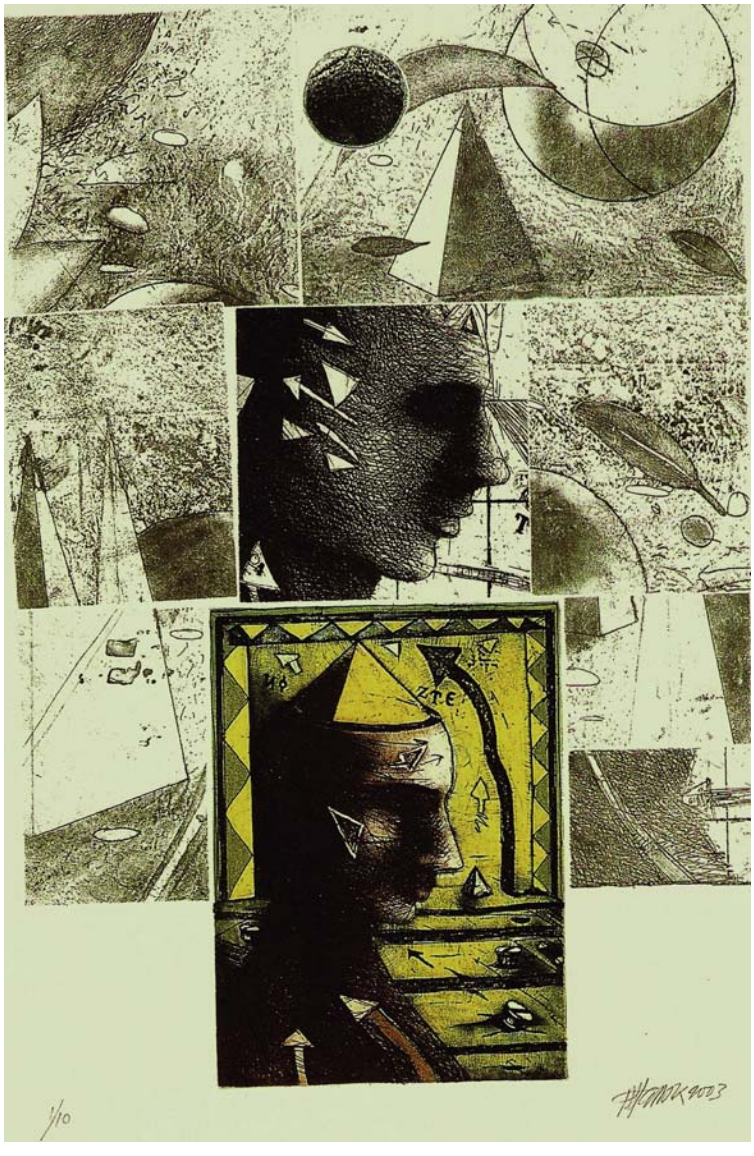

यशपाल चंद्राकर *टेन विंडोज*
एचिंग, 58.42 x 43.18 से.मी.

शाहिद परवेज़ *फ्रेंड्स*
सेरीग्राफ, 35.56 x 45.72 से.मी.

दत्तात्रेय आप्टे, *स्टार गेज़िंग*
इनटैगलियो, 30 x 50 से.मी.

हेमावती गुहा *द क्लाउन*
वुडकट, 55 x 45 से.मी.

ज़्यादा जानकारी के लिए:

फ्रेंक म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट

http://jsp.otterbein.edu/dept/art/frank/museum.html

विजय कुमार

http://www.iaac.us/erasing_borders2008/curator.htm

के. आर. सुबन्ना, *रिमेन्स इन मूनलाइट एचिंग, 19 x 27.5 से.मी.*

पूर्व आवास है। उन्होंने 1877 में बने सलेम इवैंजेलिकल चर्च को 1956 में अपने पति पॉल की सहायता से अपने आवास में बदल दिया था। वर्ष 1999 में लिलियन की मृत्यु के बाद उनका आवास कॉलेज को कला संग्रहालय के रूप में प्रयोग करने के लिए दे दिया गया और 2004 में यह संग्रहालय शुरू हो गया।

संग्रहालय के निर्देशक निकॅलस हिल बताते हैं कि कई साल पहले अपने संसाधनों को विस्तार देने के लिए ओहायो के छोटे निजी कॉलेजों ने अपने कला संग्रहों को विशिष्ट क्षेत्रों पर केंद्रित करने का निर्णय लिया था। वह कहते हैं, ''फ्रैंक म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट का उद्देश्य वैश्विक कला को प्रदर्शित करना है। हम अफ्रीकी और जापानी कला के नमूने प्रदर्शित कर चुके हैं लेकिन हमारे यहां भारतीय कृतियां नहीं थीं। भारतीय कला की प्रदर्शनी लगाने का एक और भी कारण था- कोलम्बस, ओहायो क्षेत्र में काफी संख्या में भारतीय अमेरिकी रहते हैं।''

2 अप्रैल से 6 जून तक जारी यह प्रदर्शनी न्यू यॉर्क सिटी में मैनहट्टन ग्राफ़िक सेंटर में विजय कुमार से हुई निकॅलस हिल की भेंट के कारण संभव हो पाई। 2004-06 में विजय कुमार ने अमेरिकी-भारतीय छापा कृतियों की एक बड़ी प्रदर्शनी का संयोजन किया था जो भारत में भी प्रदर्शित की गई थी, इसमें निकॅलस हिल का काम भी शामिल था। बाद में जब हिल अपने आगामी कार्यक्रमों की योजना बना रही थीं तो उन्होंने भारतीय छापा कलाकृतियों की प्रदर्शनी के लिए कुमार को आमंत्रित किया।

विजय कुमार भारतीय कला की कई प्रदर्शनियों, विशेषकर न्यू यॉर्क में, के योजनाकार रहे हैं। वह बताते हैं, ''मैनहट्टन में कम से कम 10 गैलरियां समकालीन भारतीय कला प्रदर्शित करती हैं। उनके बहुत से ग्राहक भी भारतीय मूल के हैं। कुछ समय से मार्लबरॉ जैसी सुस्थापित गैलरी भी भारतीय कला प्रदर्शित करने लगी है। लेकिन यह समय ही बताएगा कि भारतीय समकालीन कला अमेरिकी कला की मुख्यधारा से कभी जुड़ भी पाएगी या नहीं?''